International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 08-04-2019; Accepted: 11-05-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 4; July 2019; Page No. 13-14

समकालीन हिंदी साहित्य में पर्यावरण–विमर्श

डॉ० आर० के० डी० निलंति कुमारी
ज्येष्ठ व्याख्याता, भाषा, संस्कृति एवं रंग कला अध्ययन विभाग, श्री जयवर्धनपुर विश्वविद्यालय, गंगोडविल, नुगेगॉड, श्री लंका।

प्रस्तावना

आकाश, वायु, जल, वृक्ष, पृथ्वी, अग्नि, पहाड़, पशु–पक्षी आदि समस्त तत्वों तथा पदार्थों का समग्र रूप ही पर्यावरण है। हिंदी साहित्य के आरंभ से ही कवि पर्यावरण के प्रति सजग रहे। तुलसीदास द्वारा विरचित 'रामचरितमानस' में राम गंगा आदि नदियों की पूजा करते तथा सीता वृक्षों को सीचती दर्शाये गये हैं। प्राचीन काल में ऋषि–मुनि वनों में ही आश्रम बनाकर रहते थे। प्राचीन काल में वन ही सन्यासी जीवन के तप का प्रमुख केंद्र हुआ करते थे। समकालीन साहित्य में भी पर्यावरण के प्रति जागरुकता विद्यमान है। भारतीय कहानीकार संजीव द्वारा विरचित 'आरोहण', हरीचरन प्रकाश की 'नाले का तट', श्री लंका के कहानीकार एरिक इलयप्प आरच्चि द्वारा विरचित 'मिनिस वटय' तथा निष्शंक विजेमान्न द्वारा विरचित 'गस' (पेड़) कहानियों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता पर्यावरण संबंधी विभिन्न स्थितियाँ प्रकट होती हैं।

'आरोहण' कहानी उद्धृत किये गये निम्न प्रसंग रचयिता के मन में पर्यावरण के प्रति प्रेम का द्योतक है–

'' शेखर अपने बाइनो क्यूलर से पहाड़ों और घाटियों को देखने में रमा हुआ था, मगर रूप सिंह आँखें बंद करके भी पंद्रह किलोमीटर और ग्यारह साल की दूरी से देख सकता था अपने गाँव को।...

.....सामने के पहाड़ों पर बादलों के पंख लग गये थे, जो झर–झरकर उनके अगल–बगल उड़ रहे थे। नीचे घास लताएँ और पेड़ों के कहीं फीकी, तो कहीं चटक हरियाली समेट पहाड़, कहीं कच्चे, कहीं पक्के! नीचे कोई नदी बी रही थी।''[1]

रूप सिंह जब अपने बचपन की एक घटना सुनाता है, उसमें प्रकट होता है कि एक पेड़ कारण उसके और उसके बड़े भाई के प्राण बच गये, वह पेड़ अब किसी ने काट दिया है–

'' मैं भाग गया था घर से देवकुंड। भूप दादा मुझे खोजते हुए आये, और मैं पकड़ा गया। ...उनसे छुटकारा पाने को मुझे कुछ न सूझा, तो मैंने धक्का दे दिया उन्हें– यहाँ इसी जगह। वे सँभल न सके फिसल गये मेरा हाथ उने हाथ में था, सो मैं भी खिंच गया। इस ढलान पर हम दोनों ही लुढ़कने लगे। नीचे एक पेड़ था, अब नहीं है, उसने जैसे थाम लिया हम दोनों को। '' [2]

जैसे ही अपने पुराने गाँव 'माही' समीप होता है, तो रूप सिंह का मन फिर पर्यावरण के प्रति सजग हो उठता है–

'' वर्षों की बंद स्मृतियों के कपाट खुल रहे थे– एक ओर सूपिन, दूसरी ओर जंगल, पीछे हिमांग का ऊँचा पहाड़, नीचे होंगे अपने खेत, अपना घर, अपने लोग।'' [3]

इस पुराने गाँव के चित्रण में भी पर्यावरण की सुंदरता प्रकट होती है–

'' ऊँचे हिमांग की तलहटी में छोटे–से भूखंड पर बसा यहा गाँव किसी आदिम गाँव–सा लग रहा था। झाड़–झंखाड़, बगल में बहती शूपिन का शोर। बीच–बीच में बादल के टुकड़े आ–जा रहे थे, जिनमें आँख–मिचौली खेलता उनका वजूद फिर से मायावी लगने लगा था। कभी–कभी तो भ्रम होता है कि बादल तैर रहे हैं या वे।'' [4]

श्री लंका के कहानीकार एरिक इलयप्प आरच्चि द्वारा 2011 ई. में विरचित 'मिनिस वटय' कहानी पर्यावरण से संबंधित है। 'लय्या' नामक धीवर इस कहानी का प्रमुख पात्र है। वह समुद्र के किनारे जीवन–यापन करता है। 'तेरेसा' नामक नारी के साथ 'लय्या' का संबंध होता है। बादमें उसे छोड़कर 'तेरेसा' विदेश जाती है। समुद्र के किनारे 'तेरेसा' का एक नाव था। वह नाव अचानक समुद्र में बह रही थी, जिसके चित्रण में कहानीकार पर्यावरण से संबंधित करके करके करता है–

'' तेरेसा का नाव समुद्र में ऐसा बह रही थी, मानों तट के साथ नाराज़ हो। चाहे वह नाव अपना न हो, फिर भी किसी अनजाने समुद्र में पड़कर उस नाव का विनाश होते देखना उसके लिए असह्य बात थी। ''[5]

किसी न किसी तरह 'लय्या' वह नाव बचा लेता है। '' वह थके–मादे उस नाव पर लेट जाता है। उस समय आसमान में हज़ारों तारे टिमटिमाते रहते थे। उस वक्त यह नाव उसे एक नंगी नारी की तरह लगी। ''[6]

कभी जो पर्यावरण सुंदर दिखता है, वही मनुष्य की हानि का कारण बनता है एक भू स्कलन से भूप के माँ–बाप खेती सब दबकर नष्ट हो जाते हैं–

'' तेरे जाणे के बाद अगले साल भौत बरफ़ गिरी। ये हिमांग पहाड़ उसका बोझ न उठा सका। धसक गया और अपने तीस नाली खेत, मकान, माँ–बाबा, सब दब गये मलबे में। '' [7]

मनुष्य पर्यावण के साथ संघर्ष करके उसे अपने हित बना लेता है। प्रस्तुत कहानी में भूप तथा शैला उस बात के उदाहरण है–

'' शैला के आने से खेत फैल गई। बर्फ जमी न रहे, सो हमने खेतों को ढलवाँ बणाया, मगर एक मुसीबत, पानी कहाँ से आए, एक दिन पानी की खोज में हम चढ़ गए इस हिमांग के साबुत ऊँचे हिस्से पर। वहाँ हमने देखा कि एक झरना यूँ ही उस तरफ़ सूपिन में गिर रहा था। उसे मोड़ लेने से पानी की समस्या हल हो सकती थी, मगर बीच में ऊँचा था याणी के पहाड़ काटणा था। हमने क्वार के दिन चुने, जब रातों को बर्फ जमने लगती थी, दिन को पिघलने लगती थी, मगर थोड़ी–थोड़ी। ...बड़ी

[1] संजीव की कथा यात्रा, दूसरा पड़ाव, आरोहण, पृ. 308
[2] वही, पृ. 309–310
[3] संजीव की कथा यात्रा, दूसरा पड़ाव, आरोहण, पृ. 314
[4] वही, पृ. 318
[5] पृ. 166
[6] पृ. 166
[7] वही, पृ. 321

मेहनत से हम दोनों ने मगर झरने को मोड़कर लाने में सफल हो ही गये आखिर। '' [8]

कहानीकार हरीचरन प्रकाश की 'नाले का तट' कहानी में पर्यावरण की कठोरता से संघर्ष–रत एक सेल्स वूमन का चित्रण निम्नप्रकार मिलता है–

'' वह दरवाज़े से चबूतरे जैसे बरामदे में खड़ी थी और महज चार कदम की दूरी पर मई की धधकती धूप से बेरंगा आसमान था। वह इस धूप को सोखती हुई आई थी। '' [9]

'' कुछ मोल–तोल के बाद झोला बेचकर उस औरत ने बाहर कदम रखा। धूप उसके चारों तरफ़ एकदम से भड़क उठी और उसके इर्द–गिर्द सिकुड़ने लगी। अब वह अदृश्य ताप का देहाकार वलय थी। महाझोले के भार से तिरछी होती हुई वह धूप की धार में तिरती–सी चली जा रही थी। '' [10]

विशेष रूप से गाँव के लोगों में पर्यावरण के प्रति आत्मीयता है। 'आरोहण' कहानी में भूप के निम्नांकित शब्दों में यह बात स्पष्ट होती है–

'' कौन कैता है अकेला हूँ, ...मौत के मुँह से निकाले गये खेत है, पेड़ हैं, झरना है, इन पहाड़ों में मेरे पुरखों, मेरे प्यारों की आत्मा भटकती रहती है, मैं उनसे बात करता हूँ। मैं अकेला कहाँ हूँ? '' [11]

आधुनिक युग में पर्यावरण बदल गया है। रास्तों में भीड़, बहुत सारी गाड़ियाँ मनुष्य का तनाव बढ़ा देती हैं। हरीचरन प्रकाश की 'नाले का तट' कहानी में निम्नलिखित गद्यांश इसके लिए उदाहरण है –

'' सड़के गाड़ियों से अटी पड़ी थीं। फुटपाथ पर जनसंख्या विस्फोट–सा हो रहा था। किसी समय यहाँ लोग हाथ पर हाथ डालकर चलते थे, मगर अब वह मुमकिन नहीं था। कभी भी एक जोड़े के बीच कोई तीसरा लपककर गुजर जाता था। यहाँ बहुत अच्छी आँखों की ज़रूरत थी। '' [12]

मानव द्वारा किये जाने वाले पर्यावरण संबंधी प्रदूषण आधुनिक युग में सुलभ है, श्री लंका के कहानीकार निष्शंक विजेमान्न द्वारा विरचित 90 दशक में विरचित 'तित्त सीनि' (कड़वा चीनी) कहानी संग्रह के अंतर्गत 'गस' (पेड़) कहानी में वृक्षों के प्रति 'गुण्पाल' नामक पुरुष की संवेदनशीलता प्रकट होती है, जो समस्त मानव में उत्पन्न होना चाहिए –

'' पेड़ों को टुकड़ों में ऐसा चीरते देखना, मानों किसी जानवर को टुकड़ों में काट रहा हो, उसे असह्य था।''[13]

पर्यावरण संबंधी प्रदूषण के कारण मानव ही स्वयं परेशान है। हरीचरन प्रकाश की 'नाले का तट' कहानी में राय साहब की स्थिति संबंधी निम्नलिखित गद्यांश इसके लिए उदाहरण है–

'' कभी उन्होंने सोचा था कि रिटायरमेंट के बाद अगर वह बीमार पड़े तो देसी दवाओं को अपनाएंगे। यह उनकी सामाजिक आत्मा का एकाकी विचार था। ...परंतु उनकी देह ने इस विचार का कभी साथ नहीं दिया। उन्होंने बीमारी से निजात देने वाली अंग्रेज़ी दवाओं को अनिच्छा से देखा, खाया और नासिरी नाले को कोसा। निश्चय ही प्रदूषण की वजह से देह और जड़ी–बूटी की ऐतिहासिक संगति नहीं हो पा रही है। '' [14]

इस प्रकार पर्यावरण और मनुष्य में प्राचीन काल से ही बहुत बड़ी आत्मीयता है। प्रकृति मानव का प्राण–रक्षक है। आधुनिक काल में मानव द्वारा ही पर्यावरण की हानि की जाने के कारण अब धीरे–धीरे पर्यावरण मानव के अहित बनने की संभावना है। उपर्युक्त कहानियों में समाज को यही अवधारणा मिलती है कि जब तक मनुष्य पर्यावरण की रक्षा करेगा तब तक पर्यावरण उसे सुरक्षित रखेगा।

संदर्भ सूची

1. संजीव की कथा यात्रा,1997 दूसरा पड़ाव
2. प्रकाश, हरीचरन, नाले का तट
3. गॉड़िगोमुव, उपसेन सं. 2017, उसस पेल केटिकथा संग्रहय, गोडगे प्रकाशन, मरदान, कोलोम्बो।

[8] वही, पृ. 322
[9] प्रकाश, हरीचरन, नाले का तट, पृ. 01
[10] वही, पृ. 03
[11] संजीव की कथा यात्रा, दूसरा पड़ाव, आरोहण, पृ. 326
[12] प्रकाश, हरीचरन, नाले का तट, पृ. 07
[13] पृ. 199
[14] वही, पृ. 12–13